आमंत्रित आलेख / Invited Article

कुम्भ की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक व खगोलीय प्रासंगिकता
The Spiritual, Cultural, Scientific and Astronomical Significance of Kumbh

ओम प्रकाश पाण्डेय
Om Prakash Pandey
वैज्ञानिक एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान के ज्ञाता

https://doie.org/10.10427/VP.2025835358

महाकुम्भ मेला। यह कोई साधारण मेला या धार्मिक आयोजन मात्र ही नहीं हो सकता है जहाँ करोड़ों श्रद्धालु इतने भाव से प्रति बारह वर्ष के लम्बे अन्तराल के पश्चात् एक निश्चित समय पर एकत्रित होकर माह भर के साधना द्वारा दिव्य उर्जा से आप्लावित हो उठते हों। निश्चित रुप से इस सहस्त्राब्दियों पुरानी परम्परा के पीछे जरुर कोई Strong Hidden Mystery या Scientific Reasoning होनी चाहिये। इस परम्परा के प्रति अपार जन समूह की दृढ़ आस्था के पीछे छिपे गहरे वैज्ञानिक व आध्यात्मिक कारणों से आज की पीढ़ी को भी अवगत होना चाहिए। आज हम इसी सन्दर्भ में चर्चा करेंगे।

सर्वप्रथम तो हम समझेंगे इस पर्व को कुम्भ क्यों कहा जाता है और यह महान पर्व प्रति बारह वर्ष पश्चात ही क्यों लगता है? कुम्भ का अर्थ होता है घड़ा या कलश। पौराणिक आख्यानों के अनुसार जब देवता व असुर, अमृत के लिए समुद्र मन्थन कर रहे थे तब समुद्र मथने से अमृत कलश निकला। परन्तु देवताओं व असुरों द्वारा इस कलश को हस्तगत करने की 12 दिनों की रस्साकसी में अमृत की कुछ बूंदें छिटक कर पृथ्वी पर गिर गई व जिन स्थानों पर यह गिरी उन्हीं स्थान पर कुम्भ का आयोजन प्रति बारह वर्षों के अन्तराल पर किया जाता है। अब 12 वर्षों का तर्क इस आधार पर सुनिश्चित किया गया कि देवताओं का एक दिन भारतीय काल गणना के अनुसार मानवी एक वर्ष का होता है। यहाँ व्याख्यित हुये देवता व असुर दोनों ही शब्द एक रुपक (Metafor) है, जिसका आशय प्रकृति के दैवी तत्व (Positve Elements) व आसुरी तत्व (Negative Elements) से जुड़ा है। इसी प्रकार समुद्र व अमृत कलश भी एक रुपक है, जिसका आशय ब्रह्माण्डीय भँवर (Cosmic Vortex) व ब्रह्माण्डीय ऊर्जा केन्द्र (Cosmic Energy Center) से जुड़ा है। इसी तरह बूंदो का आशय ऊर्जा अमृत के प्रवाह (Flow of Energy Necter) से है। अब Astral conditioning के अनुसार 12 वर्षों के अन्तराल पर आयोजित किये जाने वाले कुम्भ पर्व का संबंध बृहस्पति, सूर्य व चन्द्र के विशेष खगोलीय alienment से भी दिखता है। जिसमे प्रधान भूमिका बृहस्पति की होती है जिसका एक नाक्षत्रिक परिभ्रमण काल बारह वर्ष की अवधि में पूर्ण होता है, अतः कुम्भ का पर्व भी बारह वर्ष के अन्तराल पर घटित होता है। बृहस्पति की स्थिति जब वृष, सिंह व कुम्भ राशि में हो और सूर्य भी उसी समय मकर, मेष व सिंह राशि में स्थित हों तब कुम्भ पर्व होता है।

इस खगोलीय स्थिति के अनुरुप जब बृहस्पति वृष राशि में और सूर्य मकर राशि में हो तब माघ महीने में प्रयागराज के गंगा–यमुना के संगम तट पर, जब बृहस्पति कुम्भ राशि में व सूर्य मेष राशि में हो तब बैशाख महीने में हरिद्वार के गंगा तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। इसी प्रकार जब बृहस्पति सिंह राशि में व सूर्य कर्क राशि में हो तो भाद्रपद मास में नासिक के गोदावरी नदी के तट पर तथा इसके ठीक नौ महीने पश्चात जब सूर्य मेष राशि में आ जाए व बृहस्पति सिंह राशि में ही रहें तब बैसाख के ही महीने में उज्जैन के शिप्रा नदी के तट पर सिंहस्थ कुम्भ का आयोजन होता है। अब इन चारों पवित्र स्थलों पर प्रत्येक 3 वर्ष के अंतरालों पर क्रमानुसार कुम्भ मेले का आयोजन होता रहता है।

कुम्भ के आयोजन के लिए इन सभी कारकों के अतिरिक्त रेखांश का भी महत्व होता है। पुरातन काल में मानचित्रों के सटीक निर्माण व समुद्री यात्राओं के माध्यम से गन्तव्य तक पहुँचने के लिए ध्रुव के अतिरिक्त अक्षांशो (Latitudes) व रेखांशो (Longitudes) के निर्धारण की भी परिकल्पना की गई। ध्रुव के सहयोग से अक्षांशों व विषुव दिवस में एक ही समय घट रहे मध्यरात्र, सूर्योदय, मध्याह्न व सूर्यास्त के विन्दुओं को क्रमशः 0°, 90°, 180° व 270° मानकर रेखांशों का निर्धारण किया गया। अब आकलन के उस क्षण सूर्योदय होने के कारण 90° रेखांश अपने आप महत्वपूर्ण हो गया। भारत के नासिक, उज्जयिनी, हरिद्वार व प्रयागराज इसी 90° रेखांश के निकट अर्थात क्रमशः 90°, 92°, 94°, 96° पर पड़ते हैं, जिसके कारण इन स्थानों का सीधा सम्पर्क बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा की भी विशेष स्थिति में आकाशगंगा के Super assive Black Hole से हो जाता है। भारतीय शास्त्रों में आकाशगंगा के इस केन्द्र को "विष्णु नाभि" कहा गया है और यही क्षेत्र ब्रह्माण्डीय उर्जा का अजस्र स्रोत (Ultimate Source) भी है। इसी कारण कुम्भ के काल में इन ग्रहों की विशेष स्थिति ब्रह्माण्डीय उर्जा के प्रवाह को अदृश्य उर्जा पथ (Lay Line) के माध्यम से इन स्थानों पर बने Energy Vortex (उर्जा भँवर) जैसे बिन्दुओं पर केन्द्रित (Concentrate) कर देते हैं।

Quantum Physics में Energy Vortex उसे माना गया है जहाँ Time & Space की Singularity घटती है। यह Singularity वहाँ घटती है जहाँ Time & Space दोनों एक साथ विलीन हो जाते हैं। इस स्थिति में गुरुत्व (Gravity) इतना अधिक हो जाता है कि भौतिकी के सभी नियम निरर्थक हो जाते हैं क्योंकि इस विन्दु पर समय की गति (Speed of Time) व स्थान का माप (Measure of Space) एकदम से बदल जाता है। Time व Space का यह विरुपण (Distortion), श्रद्धालुओं के आत्मबोध को अध्यात्मिकता की श्रेष्ठता से अवगत कराने में सहयोगी होता है। इसका कारण यह है कि इस बिन्दु पर प्रवाहित हो रही जल की धारा इससे विशिष्ट रुप से प्रभावित हो उठती है, अतः ब्रह्माण्डीय उर्जा से अप्लावित उस जलराशि के सम्पर्क में आये लोगों के शारीरिक, मानसिक व वैचारिक चेतना जागृत हो अध्यात्मिकता की ओर उन्मुख होने लगती है।

हमारा शरीर पंचतत्वों से ही बना है। पंचतत्वों में से एक जल की मात्रा, हमारे शरीर में सबसे अधिक है। जल में एक विलक्षण क्षमता होती है कि वह उर्जा व ध्वनियों के कंपन को ग्रहण कर अपनी संरचना को बदलने के साथ सम्पर्क में आये लोगों की भावनाओं (Emotions) को भी प्रभावित कर सकती है। जापान के शोधकर्ता "स्वर्गीय मशारु इनोटा" (Late Masaru Enota) ने अपने शोध में जल को अलग अलग ध्वनियों व संगीत से intract (अंतःक्रिया) कर जमाने (Freezing) पर बने बर्फ के crystal को Microscope से देखने पर यह पाया कि मधुर व सकरात्मक ध्वनियों से यह क्रिस्टल सुन्दर आकार के बने, जबकि कर्कश व नकरात्मक ध्वनियों से क्रिस्टल बेढ़ंगे व विद्रुपों में परिवर्तित हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होनें अपने रिसर्च में यह भी पाया कि पवित्र ध्वनियों व मंत्रोच्चार से जल में वह शक्ति आ जाती है कि वह सम्पर्क में आये व्यक्तियों के स्वास्थ्य को पुष्ट करने के साथ ही उसके मन को निर्मल कर भावनाओं को भी दिव्यता प्रदान कर सकती है। नदी स्त्रोत में भी यह उल्लेखित है – "काया पवित्रो कुरुयात् मनसा निर्मलं शुचि"। इन सभी विषय पर उनकी बहुचर्चित पुस्तक "Hidden Mystery of Water" में उन्होंने विस्तार से वर्णन किया है। इस तथ्य के भी अनेक प्रमाण पाये गये हैं कि विशिष्ट सिद्ध पुरुष द्वारा मंत्र संस्कार से पूरित किये गये जल को ग्रहण करने से रूग्ण लोगों को भी स्वास्थ्य लाभ हुआ। इस आधार पर यदि अनुभूत किया जाय तो यह सहज समझ में आता है कि कुम्भ के पवित्र स्थल पर नियमित आराधना, अनुष्ठान व मंत्रोच्चार से वहाँ प्रवाहित हो रही नदियों के जल में शुद्धता, नवीनीकरण व प्रत्यावर्तन के दिव्य गुणों का समावेश सम्पर्क में आये व्यक्ति की भावनाओं को अध्यातमिकता से ओतप्रोत करने की क्षमता से परिपूर्ण होती है।

मानव चेतना, उर्जा प्रवाह व आध्यात्मिकता के सूत्र पर आश्चर्यजनक शोध के लिए विख्यात हुये अमेरिकी विज्ञानी Greg Barden (ग्रेग बार्डेन) अपनी बहुचर्चित पुस्तक Transcendence – a Powerful Fusion of Scienc & Spiritulity में मानवीय डीएनए व ऊर्जा के मध्य संभव संबंध की बात करते हैं। उनका मानना है कि कुछ विशेष ऊर्जा आवृत्ति के प्रभाव से मानवीय डीएनए में भी बदलाव आ सकता है। उनके अनुसार इस स्थिति में व्यक्ति के जैविक जीन में छिपे आध्यात्मिक, भावनात्मक व क्रियाशील गुण सक्रिय हो सकते हैं या उसमें गुणात्मक परिवर्तन हो सकता हैं। यह भी वैज्ञानिक तथ्य है कि डीएनए का 98% हिस्सा जंक डीएनए के रुप में जाना जाता है, कारण इनकी कार्यविधि निश्चित रुप से अभी तक उद्घाटित नहीं हो पायी है। इस पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों का भी यह मानना है कि इसमे छिपे गहरे व रहस्यमय तथ्य के डोरमैट कूट किसी विशेष परिस्थिति में ऊर्जा आवृत्ति के प्रभाव में सक्रिय हो कर विलक्षण अनुभूति के अवसर उपलब्ध करा सकते हैं। डीएनए के इस उन्नयन (upgradation) से मानवी चेतना अपने उच्चतर स्तर पर पहुँचने में सफल हो सकती है। ऊँ के गहरे उच्चारण पर हुये शोध से भी यह स्पष्ट हो गया है कि इसके ध्वनि तरंग मस्तिष्क के न्यूरान्स को विशेष रुप से सक्रिय कर व्यक्ति को ध्यान में केन्द्रित कर देते हैं। क्वाण्टम यांत्रिकी के संलिप्तता सिद्धान्त (Entanglement Theory) के अनुसार आपसी दूरी के उपरान्त भी अदृश्य रुप से प्रकृति के सभी कण एक दूसरे से जुड़े हुये ही नहीं है बल्कि तत्क्षण ही सूचनाओं का आदान–प्रदान भी करते रहते है। इस द्रुत संचार प्रक्रिया की हाइजनबर्ग ने अनिश्चितता का सिद्धान्त (Uncertainty Principle) के रुप में व्याख्या की जबकि अल्बर्ट आइंसटीन ने इसे दूरी पर पिशाच – सदृश कार्यवाही (Spooky action at distance) कह कर चिन्हित किया। इस वैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार कुम्भ के अवसर पर ध्यान–साधना का वातावरण स्वतः ही वहाँ उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को बिना किसी प्रत्यक्ष क्रिया के आध्यात्मिकता के भाव से आप्लावित कर सकता है।

''अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति। अप्रशस्ता इवस्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।''

||ऋग्वेद 2/41/16||

अर्थात :– माताओं, नदियों व देवियों में श्रेष्ठतम सरस्वती, हम अप्रशस्त है, हम सभी को प्रशस्त करें माता।

इस प्रार्थना का आशय व उद्देश्य यह है कि ज्ञान शुद्ध और पूर्ण हो तो अव्यक्त ही रहता है, क्योंकि सामूहिक चेतना प्रशस्त हो तो अभिव्यक्ति की आवश्यकता नहीं और वेद का ऋषि यह याचना करता है कि अदृश्य ही सही परन्तु सामूहिक चेतना के रुप में, ज्ञान की अधिष्ठात्री, सरस्वती की उपस्थिति हम सभी पर बनी रहे। अनंत काल से ऋषि–मुनि, साधु–सन्त व श्रद्धालु गण कुम्भ के विशिष्ट काल में जिस पवित्र तट पर एकाग्रभाव से सामूहिक स्नानादि द्वारा साधना–अनुष्ठान करते चले आये हों, उस भाव भूमि में प्रवाहित जल धारा में ग्रहण करने की विशिष्ट क्षमताओं के कारण ज्ञान दायिनी सरस्वती अनायास ही अदृश्य भाव से प्रवाहमान रहती हैं। इस आधार पर गंगा–यमुना की प्रकट संगम स्थली, प्रयागराज का कुम्भ इसलिये विशेष महत्वपूर्ण हो जाता है की श्रद्धालुओं को यहाँ सरस्वती का अदृश्य उपस्थिति, वैदिक मंत्र "तिस्रो देव्याः" (अर्थात गंगा, यमुना व सरस्वती के त्रिवेणी) का सामीप्य प्रदान कर उनकी चेतना को दिव्य अनुभूति के उच्चतर स्तर की ओर प्रेरित कर देती है।

वस्तुतः कुम्भ की यह भारतीय परम्परा, उस खगोलीय ज्ञान से प्रेरित है जो ब्रह्माण्डीय उर्जा व मानवी चेतना के दुर्लभ संयोग को सुलभ कराती है। यह मात्र धार्मिक प्रथा तक सीमित नहीं है बल्कि यह खगोल विज्ञान, उर्जा भँवर, चेतना को जागृत कर आत्मा को उर्ध्वरेता करने की वह महायात्रा है, जो व्यष्टि को समष्टि से जोड़कर सृष्टि के विराटत्व को आत्मसात करने के साथ परमेष्ठी से एकाकार होने का विलक्षण संयोग सभी श्रद्धालुओं को उपलब्ध कराती है। अतः कुम्भ के इस महत्व को भारत के अबालवृद्ध नर–नारी ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को, मानव से महामानव में रूपान्तरित होने का अमूल्य अवसर समझ कर गहराई से आत्मसात कर धन्य होना चाहिए।